International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 11 Issue 6, Nov.-Dec., 2023, Impact Factor: 7.326

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अभिभावक के व्यवसाय, सलाना आय तथा उनके शैक्षिक स्थिति व्यवसायिक चुनाव पर पड़ने वाले प्रभावका अध्ययन

कुमारी मेधा[1], डॉ आशावती वर्मा[2]

[1]शोधार्थी, कैपिटल विश्वविद्यालय, कोडरमा
[2]सहायक प्राध्यापक, कैपिटल विश्वविद्यालय, कोडरमा

सार संक्षेप

शिक्षा के क्षेत्र में आधारभूत, वित्तीय एवं प्रशासनिक उपायों के द्वारा राज्यों एवं केंद्र सरकार के बीच नई जिम्मेदारियों को बाँटने की आवश्यकता महसूस की गई। जहाँ एक ओर शिक्षा के क्षेत्र में राज्यों की भूमिका एवं उनके उत्तरदायित्व में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ, वहीं केंद्र सरकार ने शिक्षा के राष्ट्रीय एवं एकीकृत स्वरूप को सुदृढ़ करने का भार भी स्वीकार किया।भारत आजादी के 75 वर्षों बाद भी शिक्षा के क्षेत्र में ठोस प्रयासों के बावजूद वांछित परिणाम हासिल नहीं कर पाया है और भारत का शिक्षा जगत अनेकानेक संस्थागत समस्याओं से प्रभावित है।सरकारें भी शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिये निरंतर प्रयास करती रहती हैं। भारत में शिक्षा में गुणवत्ता एक बहुत बड़ी चुनौती है। शिक्षा लक्ष्ययुक्त बनाने से विद्यार्थियों में उस लक्ष्य को पाने की ललक, उनमें मानसिक उद्वेलन, तनाव तथा असफल होने की सम्भावना उन्हें निर्देशन की ओर मोड़ देती है। हर विद्यार्थी का पहला लक्ष्य अच्छी शिक्षा अर्जित करने, अच्छे व्यवसाय की ओर उन्मुख होना होता है। अभिभावकों के शैक्षणिक योग्यता, व्यवसाय, तथा आर्थिक स्थिति द्वारा पडने वाले प्रभावों के आधार पर यह पाया गया कि अभिभावकों की शैक्षणिक योग्यता का सबसे ज्यादा प्रभावव्यवसायीक चयन पर पड़ता है। पुनः यह पाया गया कि अभिभावकों के शैक्षणिक योग्यता, व्यवसाय, तथा आर्थिक स्थिति का प्रभाव बच्चे के व्यवसायीक चयन पर क्रमशः 177, 220, 230पाया गया।

मुख्य शब्द– ब्यवसायिक रूचि, शैक्षणिक योग्यता, व्यवसाय, तथा आर्थिक स्थिति

प्रस्तावना

शिक्षा के क्षेत्र में आधारभूत, वित्तीय एवं प्रशासनिक उपायों के द्वारा राज्यों एवं केंद्र सरकार के बीच नई जिम्मेदारियों को बाँटने की आवश्यकता महसूस की गई। जहाँ एक ओर शिक्षा के क्षेत्र में राज्यों की भूमिका एवं उनके उत्तरदायित्व में कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ, वहीं केंद्र सरकार ने शिक्षा के राष्ट्रीय एवं एकीकृत स्वरूप को सुदृढ़ करने का भार भी स्वीकार किया।भारत आजादी के 75 वर्षों बाद भी शिक्षा के क्षेत्र में ठोस प्रयासों के बावजूद वांछित परिणाम हासिल नहीं कर पाया है और भारत का शिक्षा जगत अनेकानेक संस्थागत समस्याओं से प्रभावित है।सरकारें भी शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिये निरंतर प्रयास करती रहती हैं। लेकिन इसमें भी राज्यों द्वारा चलाए जाने वाले शिक्षा सुधार कार्यक्रमों के असफल हो जाने का जोखिम रहता है, क्योंकि वे परिवर्तन करते समय रोडमैप का अनुसरण नहीं करते और नीतियाँ बनाते समय सभी हितधारकों को भी ध्यान में नहीं रखा जाता।

स्वतंत्रा के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में देश में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। आज देश के गाँव–गाँव में विद्यालय खुल गये हैं, प्राथमिक से लेकर उच्च अध्ययन की सुविधाएँ सहज उपलब्ध हैं, लेकिन वही आज के अधिकतर विद्यार्थी

शिक्षित युवा वर्ग अपने भविष्य को लेकर सबसे अधिक चिन्तित है। भारत में शिक्षा में गुणवत्ता एक बहुत बड़ी चुनौती है। शिक्षा लक्ष्ययुक्त बनाने से विद्यार्थियों में उस लक्ष्य को पाने की ललक, उनमें मानसिक उद्वेलन, तनाव तथा असफल होने की सम्भावना उन्हें निर्देशन की ओर मोड़ देती है। हर विद्यार्थी का पहला लक्ष्य अच्छी शिक्षा अर्जित करने, अच्छे व्यवसाय की ओर उन्मुख होना होता है। अभिभावकों के शैक्षणिक योग्यता, व्यवसाय, तथा आर्थिक स्थिति द्वारा पडने वाले प्रभावों के आधार पर यह पाया गया कि अभिभावकों की शैक्षणिक योग्यता का सबसे ज्यादा प्रभावव्यवसायीक चयन पर पड़ता है।अधिकतर अभिभावकों को इस सम्बन्धी अनुभव व पूर्ण जानकारी का अभाव होने के कारण समाज की भावी युवा पीड़ी के पथ–प्रदर्शन के दायित्व का निर्वाहन विद्यालयों को ही करना होता है।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन :

सिंह, एस0 (1964) ने शैक्षणिक उपलब्धि एवं पारिवारिक वातावरण, उपलब्धि आवश्यकता तथा शैक्षणिक अभिप्रेरणा के संबंधों का अध्ययन किया। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य पारिवारिक वातावरण, उपलब्धि आवश्यकता, शैक्षणिक अभिप्रेरणा तथा शैक्षणिक उपलब्धियों के संबंधों की जांच करना था। इसके लिए न्यादर्श के रूप में पटना जिले के 7 विद्यालयों के 360 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ा।

अरोड़ा, रीता (1968) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि के निर्धारण में अभिभावक बालक संबंध एवं शिक्षक छात्र संबंध तथा शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के निष्कर्षतः यह ज्ञात हुआ कि अभिभावक बालक संबंध एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया जबकि शिक्षक छात्र संबंध तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक स्तर के मध्य सार्थक संबंध पाया गया।

शोध का प्रारूप एव ं प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध की प्रकृति को देखते हुए शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।शोधार्थी ने अपनें वर्तमान अध्ययन में अभिभावक के व्यवसाय, सलाना आय तथा उनके शैक्षिक स्थिति का उनके बच्चों के व्यवसायिक चुनाव पर पड़ने वाले प्रभाव को जाँचन की कोशिश की है। कुल 400 प्रतिदर्श का चयन इस कार्य के लिए किया गया। जिसमें 200 छात्र एवं 200 छात्राओं को सम्मिलित किया गया। यह शोध हजारीबाग जिले के विद्यार्थियों के व्यवसायिक चुनाव से संबंधित है। अतः वर्णात्मक विधि तथा यादृच्छिक प्रतिदर्श को इन शोध में विधि के चयन क` रूप में अपनाया गया। प्रतिदर्श में चुनाव में यहाँ क` ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही विद्यालयां को सम्मिलित किया गया है।

तालिका–1 प्रतिदर्श का विवरण अभिभावकों के शैक्षणिक योग्यता, व्यवसाय, तथा आर्थिक स्थिति द्वारा पडने वाले प्रभावों के आधार पर (अस्वीकृति बनाम स्वीकृति)

1.	**अभिभावकों की शैक्षणिक योग्यता का प्रभाव**	**आयाम**	**कुल विद्यार्थी**	**स्रकारी विद्यालयों के विद्यार्थी**	**निजी विद्यालय के विद्यार्थी**	**छात्र**	**छात्राये**
	अस्वीकृति बनाम स्वीकृति	अस्वीकृति केंद्रित	223	111	112	114	109
		स्वीकृत केंद्रीत	177	80	97	82	95
2.	**अभिभावकों के व्यवसाय का प्रभाव**		**कुल विद्यार्थी**	**सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी**	**निजी विद्यालय के विद्यार्थी**	**छात्र**	**छात्रायें**
	अस्वीकृति बनाम	अस्वीकृति	180	80	100	77	103

	स्वीकृति	केंद्रित					
		स्वीकृति केंद्रित	220	103	117	115	105
3.	**अभिभावक के आर्थिक स्थिति का प्रभाव**		**कुल विद्यार्थी**	**सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी**	**निजी विद्यालय के विद्यार्थी**	**छात्र**	**छात्रायें**
	अस्वीकृति बनाम स्वीकृति	अस्वीकृति केंद्रित	170	110	60	87	83
		स्वीकृति केंद्रित	230	120	110	110	120

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि स्वीकृत केद्रित स्तर पर अभिभावकों के शैक्षणिक योग्यता, व्यवसाय, तथाआर्थिक स्थिति का विद्यार्थीयो के व्यवसायिक रूचि के मध्य संबध पाया गया।जहाँ छात्राओं मे स्वीकृत केन्द्रीय पर संबध95, 105 एवं 120 है वही छात्रों पर के आंकड़े 82, 115, 110 प्राप्त हुये जो लिग के आधार पर अंतर को प्रदर्शित नहीं करता है।पुनः यह पाया गया कि अभिभावकों के शैक्षणिक योग्यता, व्यवसाय, तथा आर्थिक स्थिति का प्रभाव बच्चे के व्यवसायीक चयन पर क्रमशः 177, 220, 230 पाया गया।

निष्कर्ष की परिचर्चा –

विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की संभावित रुचि से स्पष्ट होता है कि लड़कों और लड़कियों के पास समृद्ध विकास की दिशा में विभिन्न कौशलों और क्षमताओं का बढ़ावा हो सकता है। इनका अध्ययन करने से, शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षा प्राधिकरणों और संबंधित संगठनों को छात्रों के उद्यमिता, व्यावसायिक तथा सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए नैतिक दिशा में महत्वपूर्ण निर्देश मिल सकते हैं।

संदर्भित ग्रंथ –

- सिंह, राजेश कुमार (2002) : ''शोध प्रबंध जनजातीय समुदायों में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन'' राँची विश्वविद्यालय, राँची, पृ0सं0–10
- वर्मा, शरत एवं शर्मा, लालसा (2000) : ''उच्च माध्यमिक स्तर पर एकल एवं संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'', भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाई 2000, पृष्ट क्रमांक––54–58
- ज्ञानानी, टी0सी0 एवं देवगन प्रवीन (2005) : ''माता–पिता द्वारा प्रदत प्रोत्साहन एवं पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि'', भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाई 2005, एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली, पृ0सं0– 60–65
- कुमार, मनीष (2008) : ''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक अनुशासन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन; जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एक्सप्लोरेशन इन टीचर एजुकेशन वाल्युम–I अप्रैल 2008, पृ0सं0– 59–65
- गुप्ता, रश्मि एवं शर्मा, मनोरमा (2008) : ''माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत उच्च आय वर्ग और निम्न आय वर्ग वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'', रिसर्च लिंक–56, वाल्यूम VII(9) नवम्बर 2008, पृ0सं0–78–79